गृहलक्ष्मी

(पुस्तक के कुछ अंश)

घंटी की आवाज़ सुनकर रमा देवी ने दरवाजा खोला तो सामने उनकी बहू तन्वी के दफ्तर का चपरासी रतन खड़ा था।

रमा देवी को एक लिफाफा देते हुए रतन बोला- अम्मा जी, सूरज निकलने में चाहे देर कर दे, मैडम पैसे भेजने में देर नहीं करती।

रमा देवी बिना कुछ कहे पैसे लेकर अंदर आ गयी।

उनके पति आशीष जी बोले- पांच साल हो गए हमारे बेटे को इस दुनिया को गए, लेकिन हमारी बहू आज भी अपनी जिम्मेदारी निभा रही है।

रमा देवी ने कहा- बस कीजिये उस मनहूस की प्रशंसा करना। कोई अहसान नहीं करती हम पर। नौकरी भी तो उसे हमारे बेटे की जगह पर मिली है। आगे............

घंटी की आवाज़ सुनकर रमा देवी ने दरवाजा खोला तो सामने उनकी बहू तन्वी के दफ्तर का चपरासी रतन खड़ा था।

रमा देवी को एक लिफाफा देते हुए रतन बोला- अम्मा जी, सूरज निकलने में चाहे देर कर दे, मैडम पैसे भेजने में देर नहीं करती।

रमा देवी बिना कुछ कहे पैसे लेकर अंदर आ गयी।

उनके पति आशीष जी बोले- पांच साल हो गए हमारे बेटे को इस दुनिया को गए, लेकिन हमारी बहू आज भी अपनी जिम्मेदारी निभा रही है।

रमा देवी ने कहा- बस कीजिये उस मनहूस की प्रशंसा करना। कोई अहसान नहीं करती हम पर। नौकरी भी तो उसे हमारे बेटे की जगह पर मिली है।

तुम्हें कोई नहीं समझा सकता, ये कहते हुए आशीष जी अपने अखबार में खो गए।

पांच साल पहले तन्वी की शादी रमा और आशीष जी के बेटे केशव से हुई थी।

सारा घर खुशियों में डूबा था। लेकिन ये खुशियां चंद दिनों की ही मेहमान साबित हुई।

एक ही महीने बाद दुर्घटना में केशव की मृत्यु हो गयी।

रमा देवी इसके लिए तन्वी को जिम्मेदार मानने लगी और उसे घर से चले जाने का आदेश दे दिया।

तन्वी के माता-पिता उसकी दूसरी शादी करना चाहते थे लेकिन वो नहीं मानी।

अलग रहकर भी तन्वी अपने सास-ससुर के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाती रही।

अगला महीना आधा बीत गया लेकिन पैसे नहीं आये। रमा देवी का गुस्सा चरम पर था।

उन्होंने आशीष जी से कहा- पिछली बार तो बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे अपनी बहू के बारे में। आखिर उसने अपना रंग दिखा दिया ना। कुछ ही दिनों बाद दीवाली है। क्या करेंगे हम?

आशीष जी ने कहा- कुछ बात हो गयी होगी। कहो तो पता कर आऊँ।

रमा देवी बोली- कोई जरूरत नहीं उस मनहूस की सूरत देखने की।

अगले दिन रतन पैसे लेकर रमा देवी के घर गया।

रमा देवी ने तीखे स्वर में कहा- तुम्हारी मैडम को याद आ गयी हमारी?

रतन बोला- अम्मा जी मैडम तो एक महीने से अस्पताल में है। सीढ़ियों से गिरने के कारण पैर में फ्रैक्चर आया है उनके और सर में भी चोट लगी है।

उन्होंने पैसे भिजवा दिए थे मुझे आपको देने के लिए पर मैं ही भूल गया।

आज उनके पूछने पर मुझे याद आया।

उन्होंने माफ़ी के साथ ये लिफाफा भेजा है।

हम भी माफ़ी मांगते है अम्मा जी।

ये कहकर रतन चला गया।

रतन की बात सुनकर रमा देवी और आशीष जी चौंक उठे।

आशीष जी ने कहा- बस अब बहुत हुआ। अब मैं तुम्हारी एक नहीं सुनूंगा। मैं जा रहा हूँ अपनी बहू से मिलने।

रमा देवी ने कहा- ठहरो मैं भी चलूंगी।

रमा देवी और आशीष जी को देखकर सहसा तन्वी और उसके माता-पिता को यकीन नहीं हुआ।

तन्वी बोली- अम्मा जी, बाबूजी क्षमा कर दीजिए, इस महीने मैं वक्त पर...

रमा देवी ने तन्वी के मुँह पर हाथ रखते हुए कहा- बस बेटी कुछ मत बोलो। माफ़ कर दो अपनी अम्मा को।

लोग अपनी गृहलक्ष्मी का मान-सम्मान करते है और मैंने तुम्हें बस तिरस्कार दिया उस बात के लिए जिस पर तुम्हारा कोई वश नहीं था।

अपने दुख में अंधी मैं तुम्हारा दुख देख ही नहीं सकी।

तन्वी बोली- नहीं-नहीं अम्मा जी ऐसा मत कहिये। आपकी कोई गलती नहीं। दोष तो नसीब का है।

रमा देवी ने तन्वी को गले से लगा लिया।

तन्वी के मना करने के बाद भी रमा देवी अस्पताल में उसके साथ रही।

दीवाली के दिन तन्वी को अस्पताल से छुट्टी मिली।

उसके माता-पिता से रमा देवी ने कहा- अगर आप आज्ञा दें तो मैं अपनी गृहलक्ष्मी को उसके घर ले जाना चाहती हूँ।

सभी लोग रमा देवी की इस बात से हैरान हो गए।

रमा देवी और आशीष जी तन्वी को लेकर घर पहुँचे।

रमा देवी ने कहा- आज की दीवाली कितनी खास है। सालों बाद इस घर की लक्ष्मी वापस लौटी है।

आशीष जी मिठाई का डब्बा खोलते हुए बोले- इस खुशी में हम सब मुँह मीठा करेंगे।

रमा देवी के हाथ से मिठाई खाते हुए तन्वी की आंखें खुशी से भर आयी थी।

केशव की तस्वीर भी आज अपने परिवार को साथ देखकर मुस्कुरा रही थी।